philoLosophy

Ajeet kumar
Assistant professor
of
C.M.S College
Donwarihat

Date-30/05/2020

Nyaya. proofs for the existence of god

गौतम ने न्यायसूत्र में ईश्वर का नाम मात्र के लिए उल्लेख किया है। प्रशस्तपाद और वात्स्यायन ने स्पष्टतः ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया है। उन्होंने ईश्वर को आत्मा के ~~वर्ग~~ वर्ग में रखा और जीवात्मा से उसका भेद करने के लिए उसे परमात्मा कहा। श्रीधर और उदयनाचार्य ने 8 युक्तियों के आधार पर ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने का प्रयास किया। वस्तुतः न्याय दर्शन में प्रमाणमीमांसा के बाद दूसरा सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष ईश्वर मीमांसा ही है।

न्याय दर्शन का ईश्वर जगत का ~~आदि~~ पालक और संहारक है। वह शून्य से जगत की सृष्टि न करके नित्य परमाणुओं (पृथ्वी, जल,

आकाश, मन तथा आत्माओं से उसकी सृष्टि करता है। ईश्वर का मात्र निमित्त कारण है उपादान कारण नहीं। न्याय दर्शन का ईश्वर वेदान्त के ब्रह्म की तरह मकड़ी की भांति अपने उदर से सृष्टि को उत्पन्न नहीं करता बल्कि कुम्हार की भांति नित्य परमाणुओं से उसकी सृष्टि करता है। इसके अतिरिक्त न्याय दर्शन का ईश्वर जीवों के कर्मों का प्रयोजन कारण भी है। इसके अतिरिक्त न्या. ~~दर्शन का ईश्वर~~ न्याय दर्शन का ईश्वर शरीरधारी है वह सत, चित्त-आनन्द से परिपूर्ण है। इसमें अधर्म मिथ्याज्ञान तथा प्रमाद का ~~ईश्वर~~ अत्यन्ताभाव है। ईश्वर सर्वज्ञ नित्य ज्ञानवान तथा इच्छाशक्ति से युक्त है। वह विशुद्ध अबाधित प्रतिभा तथा परमानन्द का भण्डार है यद्यपि ईश्वर में अनन्त अनन्तगुण है। प्रधान उनमें छः गुण अत्यन्त महत्वपूर्ण है